।। सन्मुख बेमुख को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सन्मुख बेमुख को अंग लिखंते ||

गुर देव कूं घर लायके || मैमा करी अपार ||
से सनमुख सुखराम के || अेसे करो बिचार ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने इस अंगमे सतगुरुके सन्मुख कौनसा शिष्य है व सतगुरु के बेमुख कौनसा शिष्य है इसका वर्णन किया है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जो शिष्य अपने सतगुरु को अपने घर लाकर उन्हे साक्षात परमात्मा समजकर उनकी अपार महिमा करता है । अपार आदर करता है वह शिष्य सतगुरु के सन्मुख है ऐसा सभी नर–नारीयो समजो ।।।१।।

बे मुख तो से सिष हे || आज्ञा ले कर जाय ||
बोहोर गुरू नही भेटीया || ध्यान मन धर्‌यो न लाय ||२||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि वह शिष्य सतगुरु से बेमुख है जो अपने सतगुरु को साक्षात परमात्मा न समजते जगतके नर नारी बराबर समजता है । तथा जो शिष्य सतगुरु से परमात्मा पानेकी आज्ञा लेकर फिरसे सतगुरु को कभी मिलने नही जाता है व सतगुरु का ध्यान साक्षात तो छोड दो मनमे भी कभी नही लाता है वह शिष्य सतगुरु से बेमुख है यह समजो । ।।२।।

से बेमुख किम जाणीये || जामे कसर न कोय ||
ज्ञान कहे सो सब करी || फिर तहाँ हाजर होय ||३||

सतगुरु जो कहते है वैसा शिष्य कोई कसर न रखते सब करता है व जहाँ तहाँ सतगुरु के सन्मुख हाजर रहता है वह शिष्य बेमुख है ऐसा उलटा नही जाणना चाहिये वह शिष्य सन्मुख ही है,यही जाणना चाहिये ।।।३।।

बेमुख तो से सिष हे || हुवा नचिता जाय ||
पँथ चलायो आपको || गुरू मैमा नही माय ||४||

जो सतगुरुसे ग्यान सिखकर सतगुरुसे न्यारा अपने मतके ग्यान साथ मिश्रीत ग्यान बनाकर अपने ग्यान मतपे निश्चिंत हो जाता है व सतगुरु के आग्यासे सतगुरुका पंथ न चलाते अपने ही मन मत से सतगुरु से न्यारा पंथ चलाता है व जिन सतगुरु से ग्यान मिला था उनका जरासा भी आदर नही करता है ऐसा शिष्य बेमुख है ऐसा जाणो ।।।४।।

से बे मुख किम जाणीये || ज्यांरे ऊर आचाय ||
दिस बंदे म्हेमा करे || फिर द्रसण कूं जाय ||५||

जो शिष्य सतगुरु के दर्शन की सदा उरमे चाहणा रखता है तथा किसी कारण दर्शन करने नही जाते आया तो जिस दिशामे सतगुरु रहते है उस दिशा मे वंदना करता है व अपने उरमे सतगुरु की अपार महिमा आदर करता है व जैसे तैसे करके सतगुरु के दर्शन योग लाकर सतगुरु के दर्शन को जाता है ऐसा शिष्य सतगुरु से बेमुख है ऐसा कौन कहेगा

।।।५।।

बे मुख तो से सिष हे ।। मुख सूं कहे बणाय ।।
केतां सो करता नही ।। से झूटा जग माय ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,बेमुख तो वह शिष्य है जो सतगुरु से कपट रखकर मुखसे बना बनाकर मिठी मिठी बाते करता है व उन बातोके अनुसार सतगुरु शिष्य से कुछ बाते करने लगाते है तो वह शिष्य वे बाते करता नही उलटा टालता है ऐसा शिष्य सतगुरु के सन्मुख नही है बेमुख है यह समजना चाहीये । मतलब वह शिष्य सतगुरुका अस्सल शिष्य नही वह शिष्य,शिष्य के रुपमे देहसे शिष्य दिखता है परंतु अस्सल मे नकली शिष्य है झुठा शिष्य है अस्सल शिष्य नही है ऐसा उसे जाणना चाहीये ।।।६।।

गुरू म्हेमा की बंदगी ।। जंका करी भरपूर ।।
वे सनमुख सुखराम के ।। कुण कर सके दूर ।।७।।

जो शिष्य सतगुरु की महिमा तथा बंदगी भरपुर करता है ऐसे शिष्य को सतगुरु के सन्मुख है यह जाणणा चाहीये । उस शिष्यको सतगुरुके बेमुख है ऐसा धारकर उसे सतगुरुसे दुर कौन कर सकता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७।।

तका बढाया हाड रे ।। सन मुख दिया शिस ।।
ज्याँरा पटा न ऊतरे ।। जे गुर कर हे रीस ।।८।।

और जिस विरकी लढाई मे हड्डीयाँ कटती है या सिर कटकर प्राण जाता है । उसे याने जो घायल होकर आया या सिर कटाकर मर गया उसके बाद उसके वंशजोको राजाकी औरसे पट्टा या जहाँगीरी मिलती है । वह जहाँगीरी देनेवाला राजा भी यदी उसके उपर नाराज हो गया तो भी उसकी दी हुयी जहाँगीरी उससे उतर नही सकती और राजाके वंशज भी उसके उपर नाराज हो गये तो भी सिरकटीकी जहाँगीरी उतरती नही है । वैसेही शिष्य पत्नी,पुत्र,पुत्री, कुल,समाजकी पर्वा न करते सतगुरु के शरण मे गया व तन,मन,धन के सभी कष्ट सहन कर दसवेद्वार पहुँचा व सतगुरु से मोक्षकी जहाँगीरी पाया ऐसे शिष्य की मोक्षकी जहाँगीरी सतगुरु उस शिष्य पे कितना भी रुठ गये तो भी शिष्यका मोक्षका पट्टा सतगुरु से उतर नही सकता व शिष्य काळ मुखमे न जाते मोक्ष मे ही जाता ।।।८।।

क्हा हुवो किण बात को ।। चूक पडयो जे आय ।।
सुखराम ब्होत गुण आगळा ।। को किम पेल्या जाय ।।९।।

शिष्य सतगुरुकी हर बात तोल माप के उनके वचनोके अनुसार करता परंतु भुलवश कोई एखादी बात सतगुरुके अनुसार नही कर पाता । या बन पाती ऐसे भुलके कारण वह शिष्य सतगुरुके नाराज होनेपर भी वह बेमुख है ऐसा सतस्वरुप सतगुरुके देशसे नही माने जाता । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९।।

मुख सूं सूरो होय रहयो ।। अरथ न आयो कोय ।।

से नर पटा न पावसी || के सुखदेवजी तोय ||१०||

कोई नर राजासे शुरविरता की भिन्न-भिन्न बाते करता व लढाईका समय आने पे लढाई मे नही जाता या गया तो दिखावेकी लढाई करके लौटता शुरविर के सरीखे चलती तलवारोके आगे गर्दन कटे जबतक नही लढता ऐसे नरको राजा से जहाँगीरी का पट्टा नही मिलता । इसीप्रकार जो शिष्य शुरविर शिष्योके समान पत्नी,पुत्र,पुत्री,माता,पिता,धन,राजसे मोह तोड्कर देवतावो की भक्ती त्यागकर बंकनालके रास्ते से दसवेद्वार पहुँचने की बाते करता परंतु दसवेद्वार पहुँचने की भक्ती बतानेपे जरासी भी मनमे नही धारता व सतगुरु भक्ती करने लगायेंगे ये डरसे सतगुरु से दुर भागता ऐसा शिष्य सतगुरु से मोक्षका पट्टा कभी नही पाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१०।।

ज्याँ रीत त्यागी धरम की || से किम बेठा आय ||
कसर न राखी नेक भर || बे मुख कोहो किम जाय ||११||

जिस शिष्यने सतगुरु धर्मकी रीत त्याग दी व वह रीत त्यागने मे जरासी भी कसर नही छोडी ऐसा सतगुरुसे बेमुख है यह जाणणा । ऐसा शिष्य सतगुरु के साथ भी बैठते उठते रहा तो भी मोक्षमे नही जा पायेगा । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११।।

गुरू सिष कूं माने नही || सिष नीत दरसण जाय ||
टेल करे अधिन होय || तो नही ओगण माय || १२ ||

सतगुरु शिष्यको शिष्य करके गिनता नही परंतु शिष्य सतगुरुके नित्य ◉ उदरमे आदर करते दर्शन जाता व सतगुरुके आधीन होकर सेवा बंदगी करता वह शिष्य सतगुरुके सनमुख है यह जाणणा व उसमे बेमुख रहनेका कोई अवगुण है यह नही समजना ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१२।।

गुरू सरावे सिष कूं || सिख के भाव न कोय ||
से बेमुख सुखराम के || सुण गुरू दियो न रोय ||१३||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की गुरु शिष्य के गुणोकी शोभा करता है परंतु शिष्य मे सतगुरु के शोभा प्रती कोई भाव नही रहता है । मतलब दाखलामात्र जैसे पत्नी को पति के प्रती भाव रहता व पतीने पत्नी के गुणोकी शोभा करने पे पत्नी को रोना आता बिरह आता ऐसा रोना याने बिरह सतगरुने शिष्यकी शोभा करने पे शिष्यको नही आता वह शिष्य सतगुरु से बेमुख है यह जाणणा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।१३।।

प्रदिखणा दीवी नही || सुरत ज राखी नाय ||
से बे मुख सुखराम के || मन जाड ऊर माय ||१४||

सतगुरुको प्रदक्षिणा नही देता । सतगुरु मे सुरत नही रखता व सतगुरु से दासभाव न

रखते अपने मगरुर मनमे मै सतगुरुसे ग्यान ध्यान मे बडा हुँ यह समज बनाकर घमंड रखता वह शिष्य सतगुरु से बेमुख है यह जाणणा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१४।।

चरण खोळ पीया नही ।। प्रसादी लि नाँय ।।
से बेमुख सुखराम के ।। अंतर दुबध्या माँय ।।१५।।

सतगरु के चरण धोकर चरणामृत नही पिता व सतगुरु ने देणेपर सतगुरु प्रसादी भी नही लेता ऐसे शिष्य के अंतर मे सतगुरुके प्रती हलका भाव है यह जाणणा । ऐसा शिष्य सतगुरुसे बेमुख है यह जाणणा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१५।।

बे मुख को सुण शब्द रे ।। आगे फले न कोय ।।
आ पारख सुखराम के ।। सिख संग खाली होय ।।१६।।

ऐसे बेमुख शिष्य के शब्द याने ग्यान आगे आनेवाले शिष्य पिढी मे फलीत नही होंगे । इस कारण ऐसे बेमुख शिष्य ने अपने संग नये नये शिष्य जोड्कर कितने भी शिष्य बनाये तो भी एक भी शिष्य सतस्वरुप ग्यान विग्यान से भरे नही जायेंगे उलटा माया मोह मे भ्रमित रहकर सतस्वरुप ग्यान विग्यानसे खाली रह जायेंगे यही अस्सल पारख बेमुख शिष्य की है ऐसा सुखरामजी महाराज जगतके सभी नर–नारी ग्यानी ध्यानीको कहते है ।।।१६।।

।। इति सन्मुख बेमुख को अंग संपूरण ।।